ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 32-35

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-03, No.-II, Issues-15YEAR-2014 Extra

तुलसीदास का जीवन - दर्शन : एक दृष्टि

मुकेश कुमार झा

सहायक प्राध्यापक– हिन्दी विभाग, देवेन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय,बेल्थरा रोड, बलिया (उ0प्र0), भारत

सारांश : हिन्दी साहित्य के सम्पूर्ण इतिहास में गोस्वामी तुलसीदास का विशिष्ट स्थान है। उनका सम्पूर्ण जीवन–दर्शन एक ऐसे समाधिस्थ चित्त की अभिव्यक्ति है, जिसमें भारतीय दर्शन, धर्म और कला का अद्‌भुत समन्वय है। वह अनास्था के सिन्धु में आस्था का बड़वानल है। वह केवल अतीत का काव्य नहीं हैं, अपितु आगत का बोधक और अनागत का दिशासूचक भी है। उसमें कान्तासम्मित उपदेश के साथ ही साथ परिनिवृत्ति की क्षमता भी है। उसमें काव्य–कौशल और लोकमंगल की चरम परिणति है।

तुलसीदास का सम्पूर्ण जीवन एक ऐसे विशाल वटवृक्ष के सदृश्य है जिसके नीचे सभी मानव शीतलता का अनुभव करते हैं। तभी तो पाश्चात्य विद्‌वान स्मिथ के शब्दों में– ''मध्यकालीन हिन्दी काव्य के इन्द्रजालिक उद्यान में तुलसीदास का व्यक्तित्व सबसे ऊँचे वृक्ष के समान है। यद्यपि उनका उल्लेख 'आइने अकबरी' अथवा मुस्लिम इतिहास ग्रंथों अथवा उनके आधार पर लिखे गए पाश्चात्य लेखकों की रचनाओं में नहीं है, फिर भी वह अपने युग के सबसे महान कवि थे, वे अकबर से भी महान थे।'' स्मिथ ने उन्हें एक युग–विशेष का जन–सम्राट कहा है। वस्तुतः आज वह देश, काल, भाषा और धर्म की सीमाओं से परे होकर सच्चे अर्थों में लोकनायक बन चुके हैं।

गोस्वामी तुलसीदास रचित बारह ग्रंथ प्रामाणिक माने जाते हैं जो इस प्रकार हैं– रामचरितमानस, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, गीतावली, कृष्ण गीतावली, विनय पत्रिका, दोहावली, बरवै रामायण, कवितावली, वैराग्य संदीपनी, रामाज्ञा प्रश्न और रामलला नहछु। इनमें से रामचरितमानस, विनयपत्रिका, कवितावली, गीतावली, दोहावली, अधिक महत्वपूर्ण हैं, शेष उतनी महत्वपूर्ण नहीं है।

कुंजी शब्द– समाधिस्थ, अनास्था, बड़वानल, बोधक, अनागत, दिशासूचक, कान्तासम्मित, परिनिवृत, लोकनायक।

रामचरितमानस मर्यादा पुरूषोत्तम राम के जीवन–चरित्र को दर्शाने वाला श्रेष्ठ महाकाव्य है, जिसमें तुलसी ने भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन, भक्ति और कवित्व का अद्‌भुत समन्वय प्रस्तुत किया है। इस महाकाव्य की सर्जना अवधी भाषा में तथा दोहा–चौपाई भौली में की गई है। मानस की कथा सात कांडों में विभक्त है। तुलसी का मानस व्यवहार का दर्पण है। राम के जिस आदर्श रूप की परिकल्पना इस महाकाव्य में की गई है वह जीवन के हर क्षेत्र में अद्वितीय है। एक आदर्श पुत्र, भाई, पति, मित्र, स्वामी, राजा के रूप में वे पाठकों पर अपनी गहरी छाप छोड़ते हैं।

आज के वैज्ञानिक युग में तुलसी का जीवन–दर्शन समस्त मानव समुदाय के लिए अनुकरणीय है।

'मानस' और 'दोहावली' में निहित नीतियों का हम आज भी लोगों द्वारा इस प्रकार सहज भाव से उद्‌धृत करते हुए सुनते हैं मानों ये काव्य हमारी आचार–संहिता हो। मानस के संत–असंत लक्षण–निरूपण में लक्ष्मण गुह को कहते हैं–

काहु ने कोउ सुख कर दाता।
निज कृत करम भोग सब भ्राता।।

तुलसीदास ने अपने जीवन में गुरू को सर्वोच्च स्थान दिया। तभी तो एक ओर उन्होंने हनुमान चालीसा के अंत में कहा है–

जै–जै–जै हनुमान गोसाईं।
कृपा करो गुरूदेव की नाई।।

तो दूसरी ओर मानस के बालकांड के आरम्भ में उन्होंने गुरू के प्रति श्रद्धा प्रकट की है–

बन्दउँ गुरू पद कंज, कृपा सिंधु नर रूपहरि।
महामोह तम पुंज, जासु बचन रविकर निकर।।

इस प्रकार तुलसी ने गुरू के सम्मान पर विशेष बल दिया है। राम–लक्ष्मण, विश्वामित्र एवं वशिष्ठ का विशेष सम्मान करते हैं। वे उनके सामने संकोच के कारण अपने मनोभाव तक व्यक्त नही कर पाते। काक भुशुण्डि एवं गुरू के संवाद में एक अवसर पर गुरू को प्रणाम न करने पर शिव ने गुरू अपराधी को जो दंड दिया है वह यह पुष्ट करता है कि लोक मर्यादा एवं शिष्टता का उल्लंघन करने वाले को क्या दुष्परिणाम भोगने पड़ते हैं–

एक बार हरि मन्दिर, जपत रहेऊ शिव नाम।
गुरू आयहु अभिमान तें, उठि नहिं कीन्ह प्रणाम।।

तब भगवान शिव इस मर्यादा हनन को सह नहीं सके और

अनुरूपी लेखक

PIF/5.002 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-03, No.-II, Issues-15YEAR-2014 Extra

मन्दिर में आकाशवाणी हुई–

जौ नहिं दण्ड करौं खल तोरा।
भ्रश्ट होई स्रुति मारग मोरा।।

भक्त तुलसी अपने जीवन में सत्संग को विशेष महत्त्व दिया है। क्योंकि बिना सत्संग के ज्ञान नहीं होता और सत्संग राम जी की कृपा बिना मिलना दुर्लभ है–

बिनु सतसंग विवेक न होई।
राम कृपा बिनु सुलभ न सोई।।

आगे उन्होंने सतसंगति के महत्व पर प्रकाश डाला है। वे कहते हैं कि दुष्टजन भी अच्छी संगति पाकर सुधर जाते हैं, जैसे पारस को छूने से लोहा कंचन हो जाता है–

सठ सुधरहिं सतसंगति पाई।
पारस परसि कुधातु सुहाई।।

तुलसी ने ब्रह्म को निर्गुण, निराकार, निर्विकार, सर्वव्यापी, सच्चिदानन्द, अनादि, विश्वरूप कहा है। उन्होंने राम को ब्रह्म कहा है। वे राम और ब्रह्म की एकता निरूपित करते हुए कहते हैं–

अमल अनवद्य उद्वैत निर्गुण
सगुन ब्रह्म सुभिराम नरभुप रूपं।।

तुलसी के राम निर्गुण और निराकार ब्रह्म के ही सगुण साकार रूप है–

अगुन सगुन दुई ब्रह्म सरूपा।
अकध अगाध अनादि अनूपा।।

तुलसी के अनुसार जीव पंच–तत्वों से निर्मित हुआ है– **छिति जल पावक गगन समीरा।**
पंच तत्व मिलि अधम सरीरा।।

यह जीव मन, प्राण और बुद्धि से विलक्षण है। यह ईश्वर का ही अंश है अतः ईश्वर के समान चेतन, अमल, अविनाशी एवं सहज सुखों का भण्डार है, किन्तु माया के वशीभूत होने के कारण यह अपने मूल स्वरूप को भूल चुका है– **ईश्वर अंश जीव अविनाशी।**
चेतन अमल सहज सुखरासी।।
सो माया वस परयो गोसांई
बंधयो कीर मरकट की नाई।।

तुलसी की मान्यता है कि माया का प्रभाव जीव पर होता है, ईश्वर पर नहीं। माया तो ईश्वर के अधीन है– 'परवस जीव स्ववस भगवंता। राम सर्वज्ञ, मायापति, सर्वशक्तिमान हैं जबकि जीव अल्पज्ञ, परतंत्र माया के वशीभूत हैं।

तुलसी ने जगत को 'सियाराममय' स्वीकार करते हुए कहा–**सियाराममय सब जब जानी।**
करहुं प्रणाम जोरि जुग पानी।।

तुलसीदास ने अपने जीवन में नारी को गृहलक्ष्मी एवं अन्नपूर्णा मानते थे तथा उसे परिवार की धुरी स्वीकार करते थे। उन्होंने अपने सामाजिक आदर्श भारतीय संस्कृति की नींव पर खड़े किए हैं। पत्नी का क्या धर्म है इसका विवेचन वे 'अनुसूया–सीता' प्रसंग में इस प्रकार करते हैं–

अमित दानि भर्ता बैदेही।
अधम सानारि जो सेब न तेही।।
धीरज धर्म मित्र अरू नारी।
आपद काल परिखिअंहि चारी।।
वृद्ध रोगवस जड़ धन हीना।
अंध बधिर क्रोधी अतिदीना।।
ऐसेहु पति कर किए अपमाना।
नारी पाव जमपुर दुख नाना।।
एकई धर्म एक व्रत नेमा।
काँय, वचन मन पति पद प्रेमा।।

रामचरितमानस में तुलसीदास ने आदर्श मित्र के रूप में राम–सुग्रीव की मित्रता को दिखाते हैं। सुग्रीव से राम की मित्रता हनुमान ने अग्नि को साक्षी मानकर कराई है। जब उन्हें अपने मित्र सुग्रीव की विपत्ति कथा का बोध होता है, तो वे बालि को मारने की प्रतिज्ञा करते हुए मित्र के कर्त्तव्य का बोध इन शब्दों में कराते हैं–

जे न मित्र दुख होहिं दुखारी।
तिन्हहि विलोकत पातक भारी।।
जिन दुःख गिरि सम रज करि जाना।
मित्रक दुःख रज मेरू समाना।।
विपत्ति काल कर सतगुन नेहा।
श्रुति कह सन्त मित्र गुन एहा।।

तुलसी ने आदर्श शासन–व्यवस्था के लिए रामराज्य की परिकल्पना की, जो आज के समय में काफी प्रासंगिक माना जाता है। शासक के कर्त्तव्य और दायित्वों का उल्लेख करते हुए, वे कहते हैं–

मुखिया मुख सो चाहिए, खान–पान को एक।
पालई–पोसई सकल अंग, तुलसी सहित विवेक।।

अर्थात, मुखिया या राजा मुख की तरह होता है। जैसे हम भोजन मुख से ग्रहण करते हैं किन्तु उसके द्वारा पूरे भारीर और सभी इन्द्रियों का पोषण होता है। मुँह में कुछ नही रहता है। इसी प्रकार भगवान राम राजा होते हुए भी पूर्ण रूप से त्यागी थे और प्रजा का सम्यक् पालन–पोषण करते थे।

भगवान राम का आदर्श ही था– **''जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी, सो नृप अवसि नरक अधिकारी।।''** प्रजा पालन में तत्पर श्रीराम के राज में सभी प्रकार के लोग अपनी–अपनी सीमा में रहते हुए, सुख और भांति का

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-03, No.-II, Issues-15YEAR-2014 Extra

अनुभव करते थे। इस व्यवस्था के मूल में विशेष बात थी– दण्डनीति और भेदनीति का अभाव। जहाँ एक ओर गोस्वामी जी यह स्वीकार करते हैं कि दरिद्रता के समान दूसरा दुःख नहीं हैं, वहीं वे उसको दूर करने का उपाय बताते हुए कहते हैं– **जहाँ सुमति तह सम्पति नाना।**
जहाँ कुमाति तह विपति निदाना।।

इस प्रकार गोस्वामी तुलसीदास जी गरीबी, बेरोजगारी एवं दरिद्रता के मूल में कुमति पारस्परिक मनोमालिन्य, वैशम्य और सन्देह को ही मानते हैं। दरिद्रता निवारण हेतु जहाँ पर वे कर्म के सिद्धांत को स्वीकार करते हैं– **कर्म प्रधान विश्व करि राखा।**
जो जसि करै सो तसु फल चाखा।।

वहीं पर वह इस बात को भी इंगित करते है कि सत्कर्म के मूल में भी सदबुद्धि ही होती है। आज दुनियाँ में जो निराशा, कुंठा, कलह, अशांति और आपराधिक प्रवृतियों का बोलबाला है। उसके मूल में सद्बुद्धि का अभाव ही कहा जाएगा। उस सद्बुद्धि की प्राप्ति के लिए गोस्वामी तुलसीदास जी श्रीराम के आदर्श चरित्र के चिन्तन, मनन और गायन पर बल देते हैं।

आज सारे विश्व में व्याप्त नैतिक संकट की ओर संकेत करते हुए अंग्रेजी साहित्य के महान आधुनिक कवि टी.एस. इलियट ने अपने 'वेस्टलैंड' में इस बात पर बल दिया है और कहा है–

दत्त दयदध्वम् दम्यत् भाांतिः भाांतिः भाांतिः।

अर्थात–विश्व भाांति और परम भाांति के लिए तीन ही उपाय है–1. दत्त– अर्थात दान करना, 2. दयद्ध्वम–दया करना, 3. दम्यत– इन्द्रियों को वश में करना।

उपर्युक्त बातें ही हमारे जीवन की मूलभूत समस्याएँ हैं जो आज भी सम्पूर्ण विश्व को त्रस्त कर रही है, जिसका निदान गोस्वामी जी ने बहुत पहले प्रस्तुत किया था और इसी निष्कर्श पर आज इक्कीसवीं सदी के मनीषी, विचारक, चिन्तक और कवि भी पहुँच रहे हैं। इसीलिए हम यह कह सकते हैं कि गोस्वामी जी आज के ही सन्दर्भ में प्रांसगिक नही है, बल्कि जब तक मानव जीवन इस वसुधा पर रहेगा, तब तक उनका जीवन–दर्शन लोगों को प्रभावित करेगा। देख सकते हैं।

तुलसी ने अपने जीवन में भारणागति को काफी महत्त्व दिया है। तभी तो मानस के अलावा विनयपत्रिका में भी भारणागति का उल्लेख बार–बार हुआ है। 'कबहुंक दीनदयाल के भनके परैगी कान' की भावना में भारण–दान की जो अनवरत प्रार्थना विनयपत्रिका में की गयी है उसकी कुछ पंक्तियाँ हैं–

तोहिं मोहिं नाते अनेक मानिये जो भावैं,
ज्यों–ज्यों तुलसी कृपालु चरण–सरण पावै।
दास तुलसी सरन आयों राखिये आपने।
अब ताजि रोश करतु करूना हरि,
तुलसीदास सरनागत आयो।
पाहि–पाहि! राम पाहि!
राम भद्र रामचन्द्र स्त्रवन सुनि आयो हौं सरन।

कुल मिलाकर तुलसी का समग्र जीवन–दर्शन 'सर्वजन हिताय बहुजन सुखाय' पर आधारित है। आज का मानव उनके जीवन–दर्शन को अपने जीवन में उतार कर संसार के भ्रमजाल से मुक्ति पाकर अपने जन्म को कृतार्थ कर सकता है। तभी तो आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने तुलसी के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए कहा है– **''तुलसीदास का महत्त्व बताने के लिए विद्वानों ने अनेक प्रकार की तुलनात्मक उक्तियाँ का सहारा लिया है। नाभादास ने इन्हें कालिकाल का वाल्मीकि कहा था, स्मिथ ने उन्हें मुगल काल का सबसे बड़ा व्यक्ति माना था, ग्रियर्सन ने उन्हें बुद्धदेव के बाद सबसे बड़ा लोकनायक कहा था और यह तो बहुत लोगों ने बहुत बार कहा है कि उनकी 'मानस' भारत की बाइबिल है। इन सारी उक्तियों का तात्पर्य यही है कि तुलसीदास असाधारण, भाक्तिशाली कवि, लोकनायक और महात्मा थे।''**

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. रामचरित मानस–2–91–4
2. हनुमान चालीसा –चौपाई सं0 73–74
3. रामचरितमानस–1–सोंरठा–5
4. वही–7–106
5. वही–7–106–4
6. वही–1–2–7
7. वही–1–2–9
8. रामचरितमानस–तुलसीदास
9. वही–1–22–1
10. मानस–तुलसीदास
11. मानस–7–116–2
12. मानस–तुलसीदास
13. वही–3–4–6
14. वही–4–6–4
15. वही–2–315
16. मानस–तुलसीदास
17. मानस–5–39–6
18. वही–2–218–4
19. वेस्टलैंड–इलियट
20. मानस–7–98

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-03, No.-II, Issues-15YEAR-2014 Extra

21. वही–2–62–6
22. वही–2–64–8
23. वही–2–286–2
24. वही–2–155
25. कवितावली–उत्तरकांड छंद सं0– 33
26. वही–7–126
27. वही–7–127
28. विनयपत्रिका–79–7–8
29. वही–160–6
30. वही–243–10
31. वही–248–1

*****

संदर्भ ग्रन्थ सूची